P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मवाना तहसील जनपद मेरठ उत्तर प्रदेश में कृषि विकास का सामाजिक एवं आर्थिक अवरोध का भोगोलिक विश्लेषण

अरूण मलिक
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
गांधी स्मारक डिग्री कालेज,
परिक्षितगढ, मेरठ, भारत

सारांश

तहसील मवाना के विकास में सामाजिक जनसख्या के साथ में आर्थिक विकास का अवरोध एक महत्वपूर्ण कारक है। जिसमें सामान्य व पिछडी जाति का वर्चस्व अधिक है। उपरोक्त जातियों पर अधिक भूमि होना इसका प्राय है जबकि अति पिछडी व अनुसूचित जाति का भूमिहीन होना उनकी सामाजिक एवं आर्थिक पिछडेपन का महत्वपूर्ण कारण है।

मुख्य शब्द : कृषि अवस्थापनात्मक, तत्व साक्षरता, उत्पादन, तुलनात्मक विश्लेषण, सामामाजिक आर्थिक विकास, जाति, कृषक, ऋण।

प्रस्तावना

अध्ययन क्षेत्र राष्ट्रीय राजधानी प्रदेश के उत्तरी पूर्वी दिशा में है। इस क्षेंत्र में उच्च कृषि घनत्व 609 प्रतिशत है। तहसील मवाना जिससे यह अध्ययन सम्बन्धित है 29 डिग्री 50 मिनट तथा 29 डिग्री 14 मिनट उत्तरी अक्षाशः और 77 डिग्री 41 मिनट व 78 डिग्री 8 मिनट पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इस प्रकार तहसील का अक्षांशीय विस्तार 24 मिनट तथा देशान्तरीय 21 मिनट है। तहसील का कुल क्षेत्रफल 1066.77 वर्ग कि0मी0 है।

उच्च वर्ग की सामाजिक स्थिति

भू–स्वामित्व के कारण कृषि अवस्थापनात्मक तत्वों के विस्तार का लाभ इसी वर्ग को मिला है। इसके कृषि उत्पादन में वृद्वि होने के साथ–साथ कृषिगत भूमि में भी (बंजर एवं असर बनाकर) वृद्वि हुयी कृषि अन्तर्गत भूमि का 61.48 प्रतिशत भाग उच्च वर्ग के कृषकों के पास है। जिनमें कुल पांच जातियां आती है। जबकि शेष 12 जातियां 38 प्रतिशत कृषिगत भूमि में ही अपना जीवन यापन करती है। इन जातियों में 9 प्रतिशत सें 25 प्रतिशत साक्षरता है। हालाकि यह साक्षरता प्रतिशत बहुत कम है। लेकिन यह निम्न साक्षरता प्रतिशत इन जातियों को कृषि विकास के दौड में आगे रहेगी।

पिछड़े वर्ग की सामाजिक स्थिति

औसतन 10 एकड भूमि पर इस वर्ग के कृषक खेती करते है। इस सीमित जोत से उत्पादन तो बढ़ाया जा सकता है परन्तु इसके लिए उन्नतशील किश्म के बीज एवं समयबद्ध सिचाई की आवश्यकता है। सिंचाई के लिए पिछडे वर्ग के कृषक उच्च वर्ग की कृपा पर निर्भर है । इस वर्ग में परिवार कल्याण कार्यक्रमों से भी कोई लाभ नही पहुँचा है। कृषि उत्पादो के आधार पर प्रति व्यक्ति वार्षिक आय बहुत कम है।

दोनो वर्गो के सामान्य सर्वेक्षण एवं तुलनात्मक विशलेषण से स्पष्ट होता है कि उच्च वर्ग (सैनी, गुर्जर, जाट,पंजाबी, ब्रहमण) में सामाजिक आर्थिक विकास तेजी से हो रहा है। अन्य पिछडे वर्ग (मुस्लिम, सपेरा, धीवर, धोबी, केवट, हरिजन, प्रजापति) में विकास निम्न है। उपरोक्त के विश्लेषण के लिए तालिका का प्रकार किया गया है–

प्रतिदर्श ग्रामों में सामाजिक स्थिति

क्र0सं.	जातियां	परिवार का आकार	कर्मकार	आश्रित	जोत का आकार
1	मुस्लिम	20.00	15.00	05.00	03.16
2	सपेरा	07.00	01.00	06.00	01.50
3	धीवर	05.00	01.00	04.00	01.00
4	मूले जाट	15.00	08.00	07.00	02.35
5	धोबी	09.00	01.00	08'.00	03.00
6	केवट	9.16	05.00	04'.16	03.22
7	हैडी	6.33	03.66	02.66	01.77
8	कश्यप	5.35	01.66	03.66	02.53
9	मुस्लिम गुर्जर	8.35	01.80	06.55	03.86
10	हरिजन	8.50	03.81	04.42	06.52
11	नाई	19.50	08.50	11.50	07.99
12	प्रजापति	16.00	09.00	07.00	06.66
13	सैनी	16.00	10.75	05.75	13.79
14	गुर्जर	8.70	04.74	04.05	11.08
15	जाट	10.25	04.00	06.25	12.66
16	पंजाबी	12.50	07.00	05.50	16.21
17	ब्राहमण	6.50	0.75	05.75	14.16

तालिका न0–02

क्र0सं.	जातियां	कुल उत्पादन (रू0में)	प्रति व्यक्ति वार्षिक आय	साक्षरता प्रतिशत में
1	मुस्लिम	131.00	6.55	12
2	सपेरा	735.00	105.00	03
3	धीवर	950.00	190.00	16
4	मूले जाट	1974.00	131.07	14
5	धोबी	1200.0	133.33	06
6	केवट	2038.00	222.50	04
7	हैडी	1495.00	236.17	06
8	कश्यप	1658.33	309.96	17
9	मुस्लिम गुर्जर	1765.33	211.41	14
10	हरिजन	5035.87	292.45	32
11	नाई	1366.75	701.28	21
12	प्रजापति	6466.00	400.00	28
13	सैनी	2325.18	1408.61	28
14	गुर्जर	11117.59	1433.79	42
15	जाट	27212.50	2654.87	62
16	पंजाबी	8187.35	2752.57	58
17	ब्राहमण	9300.00	3207.69	72

प्रतिदर्श ग्रामों में प्रतिपरिवार ऋणग्रस्तता

प्रतिदर्श ग्राम	उच्च वर्ग	मध्यम वर्ग	सीमान्त वर्ग
शेरपुर	12400	120	2666
मिर्जापुर	1280	2540	1933.33
तरबियतपुर जनूबी	16120	1400	1686
सांरगपुर	5400	1020	4533
मुजफ्फरपुर खुंटी	8000	9100	1933
महमूदपुर सिखेडा	10000	4040	2566

आर्थिक अवरोध

पिछले कुछ वर्षो से बैंक तथा सहकारी समितियां और ग्रामीण विकास के लिए अधिक सुविधा कराने लगे है लेकिन इस अवस्था में भी अनेक खामियों के अलावा ब्याज दर इतनी ऊंची होने से रूपया उधार लेकर अपने विकास के लिकसी काम को नही कर पाता। परिणामस्वरूप अध्ययन क्षेत्र में विकास का कार्य नही हो पाया और आर्थिक प्रगति रूक गई है तथा साथ–साथ वह

रूपया जो बैंक से लिया गया था अब कृषक के ऊपर से भार बन गया है। कतिपय मामलो में यह देखने में आया है कि उपलब्ध साख का सदुपयोग हुआ है। मवाना तहसील में बैंक के उस ऋण का न्याय पंचायतानुसार विश्लेषण किया गया है, जो न्याय पंचायतो पर देया है। अध्ययन क्षेत्र की 37 न्याय पंचायतो में प्रति परिवार ऋण का वितरण तालिका संख्या–03 से स्पष्ट होता है। पांच न्याय पंचायतो (मवाना खुर्द,महलवाला,शाहजहांपुर, बस्तौरा नारंग, खेडद्या कलां) में क्रमशः452.08, 448.25, 367.93, 294.39, 276.04, रूपया ऋण था। जो अति उच्च स्तर का है। इस विश्लेषण से यह तथ्य भी सामने आया है कि उच्च वर्ग के कृषको ने खुले दिल से ऋण को अंगीकार किया है। प्रमाण के तौर पर मवाना खुर्द, महलवाला, और शांहजहांपुर अध्ययन क्षेत्र के विकसित न्याय पंचायतो में से होना है। दूसरे बचत , विनियोग, उत्पादन तथा विकास की भावना से ऋण लेकर सीमान्त व मध्यम वर्गीय कृषक की आर्थिक प्रगति नही हुई और उनका ऋण भी भार स्वरूप लगा है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

तहसील मवाना में सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए कृषि महत्वपूर्ण योगदान है। तहसील की मुख्य फसल गन्ना है। जिसमें गन्ना फसल में अत्यधिक श्रमिकों से कार्य किया जाता है। उच्च वर्ग पर अत्यधिक भूमि होने के कारण निम्न वर्ग उनकी कृषि भूमि पर कार्य करता है। साक्षरता की दृष्टि से उच्च वर्ग में अधिक ओर निम्न वर्ग में न्यूनता है। सामाजिक विकास के लिए साक्षरता अधिक होना महत्वपूर्ण कारक है। जिससें उपरोक्त वर्गो का सामाजिक एवं आर्थिक विकास किया जा सके।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

आचार्य एस सी एण्ड शुक्ला जीसी इकोनोमिक एनेलिसिस आफ स्केल फार्मेसी इन सदर्ण राजस्थान इण्डियन जर्नल आफ एग्रीक्लचर इकोनोमिक्स 1977।

सिंह जसवीर एण्ड ढिल्लन एसएस एग्रीकल्चरल ज्योग्रफी

सिंह ब्रजभूषण तथा सिंह गोविद (1974) शस्य सम्मिश्रण विधि अध्ययन में एक पुर्नविलोकन उत्तर भारत भूगोल पत्रिका , गोरखपुर

शर्मा बी0एस0(1978) इन्टैन्सिटी आफ क्राप लैन्डयूज प्रोडक्टिविटी, भूदर्शन वोल्यूम 11–3 उदयपुर

मामोरिजा सी0बी0, एग्रीकल्चरल प्रोबलम्बस इन इंडिया इलाहाबाद,1964

अरूण मलिक, मवाना तहसील में कृषि विकास का तुलनात्मक अध्ययन अनपबलिशड एमफिल थीसिस, चौधरी चरण सिंह यूनिवर्सिटी मेरठ 2005।